आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 8 February, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *अपने प्राप्तियों की स्मृति में रहते हुए अपने विजयीरतन होने की आनन्द में मगन हो जाये*

संगमयुग पर हम सभी ब्रह्मा वत्सों को जो कुछ मिला है वह चारों युगों में अन्य किसी को नहीं मिलता। चाहे सतयुग के देवी देवता हो, विश्व महाराजन हो, या द्वापर युग के अन्य कोई सम्राट।

हम सबको इन सबसे कई ज्यादा प्राप्तियाँ हुई है। अगर हम अपने प्राप्तियों को याद रखें तो सारा दिन खुशियों में झूमते रहेंगे। मन अंदर से गाता रहेगा .....

" वाह ! मेरे जैसा कोई नहीं .. पाना था सो पा लिया .. अब काम क्या बाकी रहा "

सोचो .. अपने प्राप्तियों पर नजर डालो और अपने पास्ट को एकबार निहारो

" कितना सुन्दर था वह दिन जब तुम प्रभु के द्वार पर आये थे .. जब उसका सत्यज्ञान तुम्हे मिला था .. जब उससे तुम्हारा मिलन हुआ था "

कितना खुशियों से भर गया था यह जीवन .. मन आनन्द में झूम उठा था .. वाह ! .. जन्म जन्म की इच्छा पुरी हो गई .. **जन्म जन्म की भक्ति का फल मिला**...

और फिर दौड़ प्रारम्भ हुआ अनेक प्राप्तियों का .. सत्यज्ञान ने हमारी जन्म जन्म की गुत्थियां सुलझा दी .. हमारी जीवन में खुशियों के द्वार खुल गये

शान्ति का मार्ग खुल गया .. प्रेम का मार्ग मिल गया .. एक विशेष तरह की दिव्य अनुभूति जीवन में प्रारंभ हो गई .. **योग अभ्यास होने लगा** .. प्रभु मिलन होने लगा .. उससे **वरदान और शक्तियाँ** मिलने लगी

एक सुन्दर परिवार मिला .. जो देवकुल की आत्मायें थी वह इकट्ठी होने लगी .. और एक निश्छल निर्मल प्रेम का आदान-प्रदान हुआ

कितना प्राप्तियाँ हुई हम सबको .. खोया हुआ स्वराज्य हमारे द्वार पर आने लगा .. हमें एक लक्ष्य मिल गया ..

" तुमने जो स्वराज्य खोया था .. वह अब पाने का समय आ गया है "

भगवान के गाइडेंस में हम चलने लगे .....

यह तो हुई यहाँ की प्राप्ति। लेकिन वह प्राप्तियाँ तो और भी सुन्दर रही हर एक की, जो हर एक को योगयुक्त होने पर सुन्दर अनुभव प्राप्त हुए।

किसी को कैसा अनुभव .. किसी को कैसा अनुभव .. किसी को बाबा के भिन्न भिन्न तरह के साक्षात्कार .. किसी को दुःखों से मुक्ति .. किसी को समस्याओं का समाधान मिला

किसी के सामने बाबा आकर खड़ा हो गया ...

" मैं तुम्हारे साथ हूँ .. चिन्ता न करो "

किसी के उसने सारी चिन्तायें और बोझ हर ली ..

तो ज़रा गम्भीर होकर संगमयुग की प्राप्तियों पर एक नज़र डाले। प्राप्ति स्मृतिस्वरुप हो जाये। तो जब प्राप्तियाँ बहुत होते है, तो मन खुशियों में झूमता रहता है।

साथ ही साथ हम याद रखे जहाँ निश्चय है वहाँ विजय है। निश्चय मनुष्य को निश्चिंत भी करती है। और निश्चय मनुष्य को विजय भी दिलाती है।

हर चीज़ में निश्चय। अगर आप स्टूडेंट है तो एक्साम के रिजल्ट में आपको निश्चय होना चाहिए। स्वयं में निश्चय होना चाहिए, हम यह कार्य करेंगे ही। हमें इसमें सफलता मिलेगी ही। भगवान हमारा साथी है। हमें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकेगा।

इसमें बहुत ज्यादा निश्चय की जरूरत है। आप कारोबार में उसमें भी निश्चय हो, इतना हमें मिलेगा ही। हमारा कारोबार ऐसा सुन्दर चलेगा ही। सफलता हमें प्राप्त होगी ही।

ऐसा निश्चय हमारी विजय को बिल्कुल सरल कर देता है। निश्चय के वायब्रेशन्स ही हमें विजय की और ले चलता है। चाहे विजय माया पर हो, क्रोध पर हो, काम पर हो।

" हमारी विजय निश्चित है .. मैं विजयी रतन हूँ "

ऐसी आज सारा दिन स्मृति में रखेंगे ....

मैं कल्प कल्प की विजयी आत्मा हूँ .. अनेक बार मैंने इस माया को जीता है .. इन विघ्न समस्याओं को पार किया .. हजारों बार .. लाखों बार .. करोड़ों बार .. अब भी मुझे ही पार करना है

यह तो बस निमित्त हाथ बढ़ाना है, कदम बढ़ाना है ... मेरी विजय तो होनी निश्चित है ...

और अभ्यास करेंगे ....

" मैं फरिश्ता हूँ .. कमल आसन पर विराजमान हूँ .. पवित्रता का फरिश्ता हूँ .. मेरे अंग अंग से पवित्र किरणें फैल रही है "

बस सारा दिन खाते पीते हर कर्म करते फ़रिश्ते स्वरुप की स्मृति प्रैक्टिस और मैं विजयी रतन हूँ यह स्वमान याद करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org